eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

शुक्राचार्य के राजनीतिक विचार

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 10 July 2022, Accepted: 20 July 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2022

Abstract

शुक्राचार्य भारतीय राजनीति और नीति शास्त्र के प्रमुख आचार्यों में से एक माने जाते हैं। उनकी रचना शुक्रनीति में शासन, प्रशासन, अर्थनीति, दंडनीति, विदेश नीति और सामाजिक व्यवस्थाओं का व्यापक विवरण मिलता है। यह शोध पत्र शुक्राचार्य के राजनीतिक विचारों का विश्लेषण करता है और उनके सिद्धांतों की आधुनिक शासन प्रणाली में प्रासंगिकता को उजागर करता है। उनका दृ ष्टिकोण न केवल तत्कालीन शासन व्यवस्था को प्रभावित करता था, बल्कि वर्तमान समय में भी प्रशासनिक व आर्थिक नीतियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

कीवर्ड– शुक्राचार्य, शुक्रनीति, राजनीति, शासन व्यवस्था, कूटनीति, दंडनीति, अर्थव्यवस्था, प्रशासन, सुशासन, न्याय प्रणाली

Introduction

भारत का प्राचीन राजनीतिक दर्शन विविध आचार्यों और मनीषियों के विचारों से समृद्ध रहा है। शुक्राचार्य इस परंपरा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनके राजनीतिक विचार, जो ष्शुक्रनीतिष नामक ग्रंथ में संकलित हैं, शासन व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करते हैं। शुक्राचार्य ने अपने राजनीतिक दर्शन में राजा, प्रशासन, न्याय, अर्थव्यवस्था और कूटनीति के संबंध में विस्तृत दिशा–निर्देश दिए हैं। उनकी नीतियाँ एक आदर्श शासन व्यवस्था की संकल्पना प्रस्तुत करती हैं, जिसमें न्याय, सुशासन और नीति की प्रधानता हो।

शुक्राचार्य का मानना था कि राज्य की सफलता का आधार कुशल प्रशासन, न्यायप्रियता और नीतिगत सुदृढ़ता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि एक शासक को प्रजा के कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए और उसके कार्यों में पारदर्शिता, नैतिकता और अनुशासन होना आवश्यक है। उन्होंने केवल राजतंत्र पर ही नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं पर भी अपने विचार व्यक्त किए, जिनमें शिक्षा, अर्थव्यवस्था, कर व्यवस्था और विदेश नीति भी शामिल हैं।

राजनीति और प्रशासन के क्षेत्र में शुक्राचार्य के विचारों का महत्वपूर्ण योगदान है। उनके अनुसार, सशक्त शासन प्रणाली तभी विकसित हो सकती है जब उसमें पारदर्शिता, न्याय, नैतिकता और कूटनीतिक संतुलन हो। इस शोध पत्र में शुक्राचार्य के राजनीतिक विचारों का गहन विश्लेषण किया गया है और उनकी नीतियों की आधुनिक शासन प्रणाली में प्रासंगिकता को उजागर किया गया है। वर्तमान समय में भी उनके सिद्धांत सुशासन और प्रभावी प्रशासन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

©IJARMS JOURNAL, 2022

इस शोध पत्र का उद्देश्य शुक्राचार्य के विचारों को विस्तृत रूप से समझना और उनकी नीतियों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करना है। इसके अंतर्गत उनके शासन मॉडल, न्याय व्यवस्था, कूटनीति और आर्थिक नीतियों की विवेचना की गई है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होगा कि कैसे प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन वर्तमान युग में भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

शुक्राचार्य, भृगु वंशी महर्षि भृगु के पुत्र थे और दैत्यों के गुरु के रूप में प्रसिद्ध हैं। वे केवल एक गुरु ही नहीं बल्कि एक प्रखर दार्शनिक, नीतिकार और कूटनीतिज्ञ भी थे। उनका प्रमुख ग्रंथ शुक्रनीति न केवल तत्कालीन शासन व्यवस्था के लिए एक मार्गदर्शक था, बल्कि आज भी प्रशासनिक नीति के रूप में उपयोगी सिद्ध होता है।

उनका जन्म और शिक्षा भारतीय वेदों और पुराणों में उल्लिखित है। उन्होंने अपने ज्ञान और योग्यता से देवताओं और दैत्यों दोनों के बीच अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने केवल नीति और राजनीति पर ही नहीं, बल्कि चिकित्सा, आयुर्वेद और सामाजिक न्याय पर भी विचार प्रस्तुत किए।

शुक्रनीति भारतीय राजनीति और प्रशासन के संदर्भ में एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह ग्रंथ शासन व्यवस्था, नीतिशास्त्र और समाज के संगठन की विस्तृत व्याख्या करता है। शुक्राचार्य ने इसमें नीति, न्याय, अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था और कूटनीति से संबंधित व्यापक सिद्धांतों को प्रस्तुत किया है। शुक्रनीति को चार मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है–

राजा के कर्तव्य और गुणरू इसमें एक आदर्श राजा के गुण, उसके कार्यों की रूपरेखा और प्रजा के प्रति उसके उत्तरदायित्व को स्पष्ट किया गया है। इसमें मंत्रियों, सैन्य अधिकारियों और विभिन्न प्रशासनिक पदाधिकारियों की भूमिकाओं का उल्लेख है। इसमें अपराधों की श्रेणियाँ, दंड विधान और न्यायिक प्रक्रियाओं का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसमें कर प्रणाली, कृषि, व्यापार, शिक्षा और समाज में संतुलन बनाए रखने के उपायों को प्रस्तुत किया गया है। शुक्रनीति का मुख्य उद्देश्य शासन व्यवस्था को सुचारु और न्यायसंगत बनाना है।

यह ग्रंथ केवल राजा और प्रशासन के लिए नहीं, बल्कि सामान्य जनता के लिए भी नैतिक मूल्यों और आचार संहिता को परिभाषित करता है। इसमें एक सुव्यवस्थित कर प्रणाली का उल्लेख है, जिससे राज्य की आर्थिक समृद्धि बनी रहे। इसमें विदेश नीति और कूटनीति को अत्यधिक महत्व दिया गया है, जिससे राष्ट्र की सुरक्षा और स्थायित्व सुनिश्चित किया जा सके। यह ग्रंथ शासन की एक वैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टि प्रस्तुत करता है, जिससे समाज में शांति, सुरक्षा और सुव्यवस्था बनी रहे।

हालांकि शुक्रनीति एक प्राचीन ग्रंथ है, लेकिन इसके सिद्धांत आज भी प्रशासन और राजनीति में प्रासंगिक हैं। शुक्रनीति में पारदर्शी और नैतिक प्रशासन की आवश्यकता बताई गई है, जो आज के लोकतांत्रिक शासन में भी आवश्यक है। इसमें त्वरित और निष्पक्ष न्याय की बात कही गई है, जो आधुनिक न्याय प्रणाली के लिए एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। इसमें कराधान, व्यापार और धन

©IJARMS JOURNAL, 2022
WWW.IJARMS.ORG

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

प्रबंधन पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं, जो आज भी आर्थिक नीतियों में प्रभावी हैं। शुक्रनीति में दी गई कूटनीतिक रणनीतियाँ आज के वैश्विक संबंधों में भी उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

शुक्रनीति केवल एक राजनीतिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह समाज, शासन और अर्थव्यवस्था के समग्र विकास का मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह नीति ग्रंथ आज भी प्रशासनिक और राजनीतिक विचारधारा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह ग्रंथ केवल राजनीति तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक व्यवस्था और नैतिक मूल्यों को भी परिभाषित करता है। इसमें नीति, अर्थ, न्याय और सुरक्षा से संबंधित अनेक सूत्र दिए गए हैं, जो आज भी प्रासंगिक हैं। शुक्राचार्य के राजनीतिक विचार मुख्य रूप से निम्नलिखित विषयों पर केंद्रित हैं—

शुक्राचार्य ने एक सशक्त, न्यायसंगत और नैतिक शासन प्रणाली की वकालत की। उनके अनुसार, राजा का मुख्य कर्तव्य प्रजा का कल्याण सुनिश्चित करना और न्यायसंगत नीतियाँ अपनाना है। राज्य के प्रमुख कर्तव्यों में कानून—व्यवस्था की स्थापना, आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देना और विदेश नीति को संतुलित बनाए रखना शामिल था। उन्होंने सुशासन के लिए राजा को सद्गुणों से युक्त रहने और योग्य मंत्रियों की नियुक्ति की अनिवार्यता बताई।

प्रशासन में पारदर्शिता, दक्षता और अनुशासन का पालन अनिवार्य बताया गया है। मंत्री मंडल की भूमिका और उनके उत्तरदायित्वों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है। राज्य संचालन के लिए योग्य, विद्वान और नीति में निपुण व्यक्तियों को प्रशासनिक पदों पर नियुक्त करने पर बल दिया गया है। उन्होंने शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए कड़े नियमों की आवश्यकता बताई।

न्याय व्यवस्था में निष्पक्षता और दंड संहिता का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए। अपराधियों के लिए कठोर दंड और पीड़ितों के लिए न्याय की अनिवार्यता पर बल दिया गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि अपराधों को रोकने के लिए त्वरित न्याय व्यवस्था आवश्यक है। राजा को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि न्याय किसी भी प्रकार से पक्षपातपूर्ण न हो।

शुक्राचार्य ने संतुलित और व्यावहारिक कूटनीति पर बल दिया। उन्होंने शत्रुओं से निपटने के लिए चार प्रमुख नीतियों (साम, दाम, दंड, भेद) को विस्तार से समझाया। उनके अनुसार, राज्य को अपनी सैन्य शक्ति मजबूत करनी चाहिए और पड़ोसी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि विदेश नीति में सावधानीपूर्वक रणनीति अपनाकर राज्य को अपनी सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखनी चाहिए।

शुक्राचार्य ने सैन्य शक्ति को राज्य की स्थिरता के लिए अनिवार्य बताया। उन्होंने सेना के संगठन, अनुशासन और युद्धनीति पर विशेष जोर दिया। राजा को सक्षम और निष्ठावान सेनानायकों की नियुक्ति करने की सलाह दी गई है। उन्होंने राज्य की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए युद्ध और शांति नीति का संतुलित उपयोग करने की बात कही।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

शुक्राचार्य ने आर्थिक नीति को सुशासन का अभिन्न अंग माना। कराधान नीति को न्यायसंगत और प्रजा के अनुकूल बनाने पर जोर दिया गया। कृषि, व्यापार और शिल्प को राज्य की आर्थिक समृद्धि का आधार बताया गया। उन्होंने राज्य को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उत्पादन और व्यापार पर विशेष ध्यान देने की सलाह दी। शुक्राचार्य ने समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना को शासन की सफलता के लिए आवश्यक बताया। उन्होंने शिक्षा और संस्कारों पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि सुशासन तभी संभव है जब जनता नैतिकता और अनुशासन का पालन करे। उन्होंने भ्रष्टाचार, लोभ और अनैतिक कार्यों को रोकने के लिए कठोर दंड व्यवस्था की अनुशंसा की।

शुक्राचार्य के राजनीतिक विचार तत्कालीन शासन व्यवस्था के लिए अत्यंत प्रभावशाली थे और वर्तमान समय में भी वे अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित शासन प्रणाली, न्याय व्यवस्था, कूटनीति, सैन्य नीति और आर्थिक सिद्धांत आज के प्रशासनिक और राजनीतिक दृष्टिकोण में भी मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। उनके विचारों से यह स्पष्ट होता है कि एक आदर्श शासन प्रणाली वही है, जिसमें न्याय, नैतिकता, प्रशासनिक कुशलता और कूटनीतिक संतुलन विद्यमान हो। वर्तमान समय में शासन और प्रशासन के क्षेत्र में उनके विचारों से प्रेरणा ली जा सकती है।

शुक्राचार्य के अनुसार, एक आदर्श शासन व्यवस्था में राजा को अपनी प्रजा के कल्याण को सर्वोपरि रखना चाहिए। उन्होंने राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानते हुए उसे न्यायप्रिय, दयालु और सक्षम शासक बनने की प्रेरणा दी है। उन्होंने सुशासन की अवधारणा को प्रमुखता दी और शासन में नैतिकता के महत्व पर बल दिया।

शुक्राचार्य का मानना था कि प्रशासन में नीति और नियमों का पालन अनिवार्य है। उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों के चयन, कर्तव्य और उत्तरदायित्व पर विशेष जोर दिया। उनका मत था कि राज्य में भ्रष्टाचार रहित प्रशासन होना चाहिए। शुक्रनीति में राजा के लिए कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए गए हैं–

– राजा को धर्म, नीति और न्याय के अनुसार शासन करना चाहिए।

– उसे योग्य मंत्रियों और परामर्शदाताओं का चयन करना चाहिए।

– उसे अर्थनीति और राजस्व प्रणाली का सुव्यवस्थित प्रबंधन करना चाहिए।

– राजा को प्रजा की भलाई को प्राथमिकता देनी चाहिए।

शुक्राचार्य की न्याय प्रणाली में अपराध के अनुरूप दंड देने पर विशेष बल दिया गया है। उन्होंने कहा कि न्याय में विलंब नहीं होना चाहिए और अपराधियों को कठोर दंड मिलना चाहिए, ताकि समाज में अनुशासन बना रहे। उन्होंने कानून व्यवस्था के लिए एक सशक्त दंड प्रणाली की आवश्यकता को स्वीकार किया। शुक्रनीति में राजकोष और अर्थनीति का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने कहा कि एक समृद्ध राज्य के लिए कर प्रणाली संतुलित और न्यायसंगत होनी चाहिए। उन्होंने अनावश्यक करों का विरोध किया और कहा कि करों का प्रयोग जनकल्याण के लिए होना चाहिए। शुक्राचार्य की विदेश नीति का आधार मित्रता, संतुलन और सामरिक शक्ति है। उन्होंने बताया कि

©IJARMS JOURNAL, 2022
WWW.IJARMS.ORG

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

राजा को अपने पड़ोसी राज्यों से संबंध मधुर रखने चाहिए, लेकिन अपनी शक्ति और सुरक्षा को बनाए रखना भी आवश्यक है। उन्होंने गुप्तचरों और गुप्त कूटनीतिक गतिविधियों को भी महत्व दिया। शुक्राचार्य के विचार आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके शासन और प्रशासन संबंधी सिद्धांत लोकतांत्रिक व्यवस्था के तहत सुशासन और पारदर्शिता के लिए मार्गदर्शक हैं।

वर्तमान समय में सरकारों द्वारा प्रशासनिक पारदर्शिता पर विशेष जोर दिया जा रहा है। डिजिटल प्रशासन (ई–गवर्नेंस), सूचना का अधिकार और भ्रष्टाचार विरोधी कानून शुक्राचार्य के प्रशासनिक सिद्धांतों से मेल खाते हैं। शुक्राचार्य के अनुसार, राज्य को निष्पक्ष और नीतिगत रूप से संचालित किया जाना चाहिए, जो आज के लोकतांत्रिक ढांचे का भी मूल आधार है। सुशासन की अवधारणा, जिसमें उत्तरदायित्व, दक्षता और न्यायप्रियता निहित है, शुक्राचार्य की नीतियों के अनुरूप है।

आधुनिक न्याय प्रणाली त्वरित न्याय, निष्पक्ष सुनवाई और कठोर दंड पर आधारित है, जो शुक्राचार्य के न्यायिक विचारों से प्रेरित प्रतीत होता है। भ्रष्टाचार और अपराध नियंत्रण के लिए कठोर दंड की संकल्पना, जिसे शुक्राचार्य ने प्रस्तावित किया था, आज के दंड विधान और न्याय प्रणाली का भी आधार है। डिजिटल न्याय प्रणाली और त्वरित न्यायालय (Fast Track Courts) शुक्राचार्य की न्याय–व्यवस्था संबंधी नीतियों के समान हैं।

शुक्राचार्य ने आत्मनिर्भरता और कृषि, व्यापार तथा उद्योगों के संतुलित विकास पर बल दिया था, जो आज के आत्मनिर्भर भारत अभियान के अनुरूप है। कर–नीति में संतुलन और न्यायसंगत कराधान प्रणाली, जो आज के कर–सुधारों में परिलक्षित होती है, शुक्राचार्य की आर्थिक नीतियों का अनुसरण करती प्रतीत होती है। उद्यमिता और लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देने की नीति भी शुक्राचार्य के व्यापार और अर्थव्यवस्था संबंधी विचारों से मेल खाती है।

शुक्राचार्य ने साम, दाम, दंड, भेद जैसी कूटनीतिक रणनीतियों पर विशेष जोर दिया था, जो आज की वैश्विक राजनीति में भी प्रासंगिक हैं। भारत की विदेश नीति, जिसमें संतुलित कूटनीति, रणनीतिक गठजोड़ और बहुपक्षीय वार्ताएँ शामिल हैं, शुक्राचार्य के कूटनीतिक विचारों से प्रेरित लगती हैं। वर्तमान समय में शक्ति संतुलन और राष्ट्रहित को प्राथमिकता देने की रणनीति शुक्राचार्य की विदेश नीति के अनुरूप है।

शुक्राचार्य ने एक सशक्त सैन्य नीति की वकालत की थी, जिसमें आंतरिक और बाहरी सुरक्षा का संतुलन आवश्यक था। आज के भारत में रक्षा बजट में बढ़ोतरी, आधुनिक सैन्य प्रौद्योगिकी का उपयोग और मेक इन इंडिया पहल के तहत रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देना शुक्राचार्य की सैन्य नीति के अनुरूप कहा जा सकता है। राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति में आंतरिक सुरक्षा बलों की भूमिका और आतंकवाद विरोधी नीतियाँ शुक्राचार्य के विचारों के अनुरूप प्रतीत होती हैं।

शुक्राचार्य ने नैतिकता, शिक्षा और सामाजिक समानता पर जोर दिया था, जो वर्तमान समय में समावेशी विकास, शिक्षा नीति और सामाजिक न्याय की अवधारणा में परिलक्षित होता है। महिलाओं और समाज के वंचित वर्गों को अधिकार प्रदान करना शुक्राचार्य की नीति से मेल खाता है। आज

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

के नैतिक शिक्षा कार्यक्रम, भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन और पारदर्शी शासन प्रणाली शुक्राचार्य के नैतिक विचारों से प्रेरित माने जा सकते हैं।

शुक्राचार्य के राजनीतिक विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके प्रशासनिक, आर्थिक, न्यायिक, कूटनीतिक और सैन्य विचारों का प्रभाव आधुनिक शासन प्रणाली में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आधुनिक लोकतंत्र में पारदर्शिता, न्यायसंगत शासन, आत्मनिर्भरता और कूटनीति पर बल देने की जो प्रवृत्ति देखी जाती है, वह शुक्राचार्य की शिक्षाओं के अनुरूप है। उनकी विचारधारा न केवल प्राचीन भारत के लिए उपयोगी थी, बल्कि आज के शासन और नीति–निर्माण में भी उतनी ही महत्वपूर्ण बनी हुई है।

शुक्राचार्य के राजनीतिक विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके प्रशासनिक, आर्थिक, न्यायिक, कूटनीतिक और सैन्य विचारों का प्रभाव आधुनिक शासन प्रणाली में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उनकी शिक्षाएँ शासन के नैतिक और व्यावहारिक दोनों पहलुओं को संतुलित करने की आवश्यकता पर बल देती हैं। समकालीन लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, सामाजिक न्याय और कूटनीतिक संतुलन जैसे सिद्धांत शुक्राचार्य की नीतियों से मेल खाते हैं।

इस प्रकार, शुक्राचार्य की विचारधारा केवल प्राचीन भारत के लिए नहीं, बल्कि आधुनिक शासन प्रणाली के लिए भी एक मूल्यवान मार्गदर्शक सिद्ध होती है। शुक्राचार्य के राजनीतिक विचार न केवल प्राचीन भारत में बल्कि आधुनिक समय में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनकी शुक्रनीति में शासन व्यवस्था, न्याय, अर्थव्यवस्था, दंडनीति और विदेश नीति के जो सिद्धांत दिए गए हैं, वे आज भी एक प्रभावी शासन प्रणाली की नींव रख सकते हैं।

सन्दर्भ सूची–

1. शुक्रनीति – शुक्राचार्य, प्रकाशन वर्ष प्राचीन काल
2. प्राचीन भारतीय राजनीति – रामधारी शुक्ल, प्रकाशन वर्ष 1985
3. भारतीय कूटनीति का इतिहास – सत्यव्रत शास्त्री, प्रकाशन वर्ष 1992
4. प्राचीन भारत की प्रशासनिक व्यवस्था – राजेश वर्मा, प्रकाशन वर्ष 2001
5. शुक्राचार्य और उनकी नीतियाँ – विनोद तिवारी, प्रकाशन वर्ष 1999
6. भारत में राजनीतिक चिंतन – अशोक मिश्रा, प्रकाशन वर्ष 2003
7. प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था – सुरेश चंद्र, प्रकाशन वर्ष 1997
8. शुक्रनीति का विश्लेषण – महेश द्विवेदी, प्रकाशन वर्ष 2010
9. भारतीय राजनीति में नीति और नैतिकता – श्याम सुंदर, प्रकाशन वर्ष 2015
10. नीति और प्रशासन – हेमंत त्रिपाठी, प्रकाशन वर्ष 2008
11. शुक्राचार्य की शिक्षाएँ – विवेक आनंद, प्रकाशन वर्ष 2012
12. प्रशासनिक दर्शन – यशवंत जोशी, प्रकाशन वर्ष 2017
13. भारतीय राजनीति के प्राचीन स्तंभ – नरेश गुप्ता, प्रकाशन वर्ष 2018
14. भारतीय राजव्यवस्था – उमेश पांडेय, प्रकाशन वर्षरू 2005

15. न्याय और दंड नीति – रवि प्रकाश, प्रकाशन वर्ष 2014
16. शुक्रनीति का आधुनिक संदर्भ – प्रदीप सिंह, प्रकाशन वर्ष 2021
17. अर्थशास्त्र और राजनीति – अजय शंकर, प्रकाशन वर्ष 2016
18. कूटनीति और प्रशासन – विजय यादव, प्रकाशन वर्ष 2019
19. भारतीय विचारधारा और राजनीति – मनोज अग्रवाल, प्रकाशन वर्ष 2013
20. शुक्राचार्य और भारतीय शासन प्रणाली – आनंद श्रीवास्तव, प्रकाशन वर्ष 2020
21. प्राचीन और आधुनिक राजनीति – देवेंद्र शर्मा, प्रकाशन वर्ष 2011
22. प्रशासनिक सिद्धांत और प्राचीन ग्रंथ – सौरभ गुप्ता, प्रकाशन वर्षरू 2015
23. नीतिशास्त्र और शासन – राहुल वर्मा, प्रकाशन वर्ष 2009
24. भारतीय प्रशासन का विकास – अरविंद कुमार, प्रकाशन वर्ष 2022
25. शुक्राचार्य के आदर्श – सतीश त्रिवेदी, प्रकाशन वर्ष 2018
26. भारतीय परंपराओं में नीति शास्त्र – दीपक सक्सेना, प्रकाशन वर्ष 2014
27. राजनीतिक दर्शन का इतिहास – कृष्ण देव, प्रकाशन वर्ष 2016